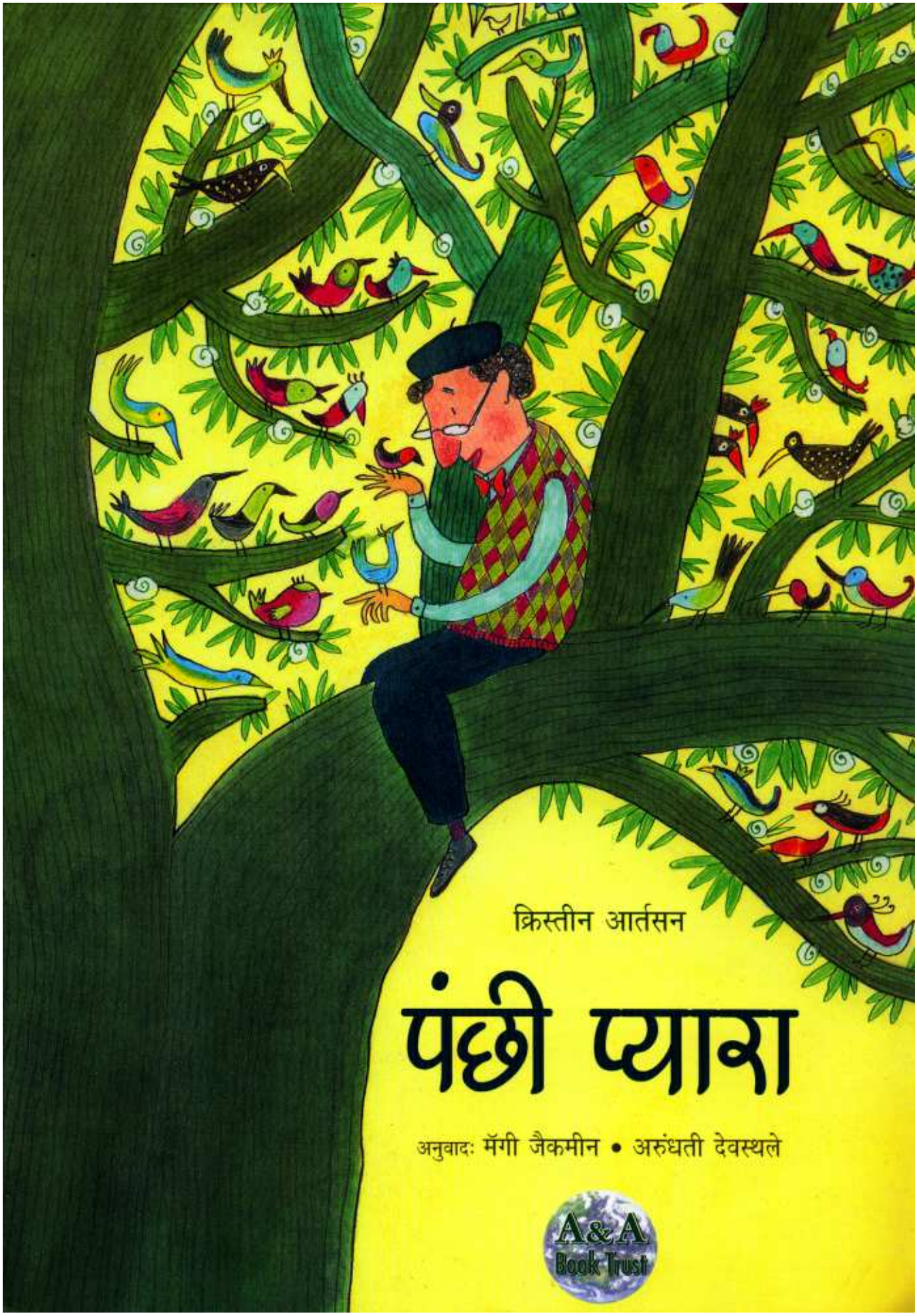

क्रिस्तीन आर्तसन

पंछी प्यारा

अनुवादः मॅगी जैकमीन • अरुंधती देवस्थले

A&A Book Trust

क्रिस्तीन आर्तसन

पंछी प्यारा

अनुवादः मॅगी जैकमीन • अरुंधती देवस्थले

A&A Book Trust

दादा और दादी पक्षी के बगीचे में एक बड़ा पेड़ था। उस पर सैकड़ों पंछी आया करते थे। दादा उन्हें गौर से देखते रहते थे। दादी को पंछियों की मीठी बोली सुनना अच्छा लगता था। वे बिल्कुल वैसी ही सीटी बजाने की कोशिश करतीं।

अपनी नुकीली नाक और गोल-गोल आँखों के कारण दादी खुद भी पंछी जैसी लगती थीं। तभी तो प्यार से उनके पति उन्हें 'पंछी प्यारा' कहते थे।

हर शुक्रवार, उनकी पोती बुलबुल अपने दादा-दादी से मिलने आती, साथ में ब्रेड, चेरी की केक और बिस्कुटों से भरा थैला लाती।

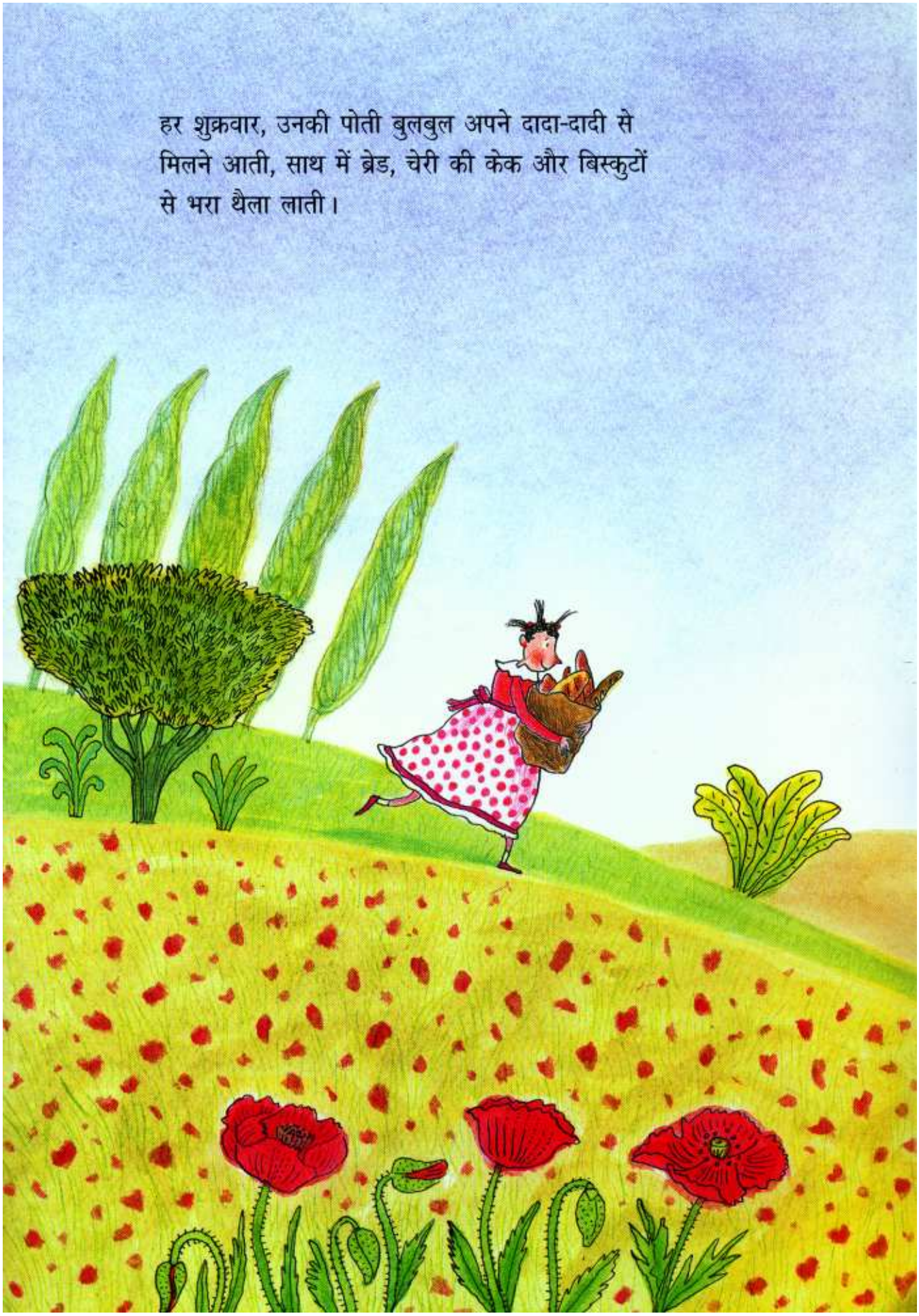

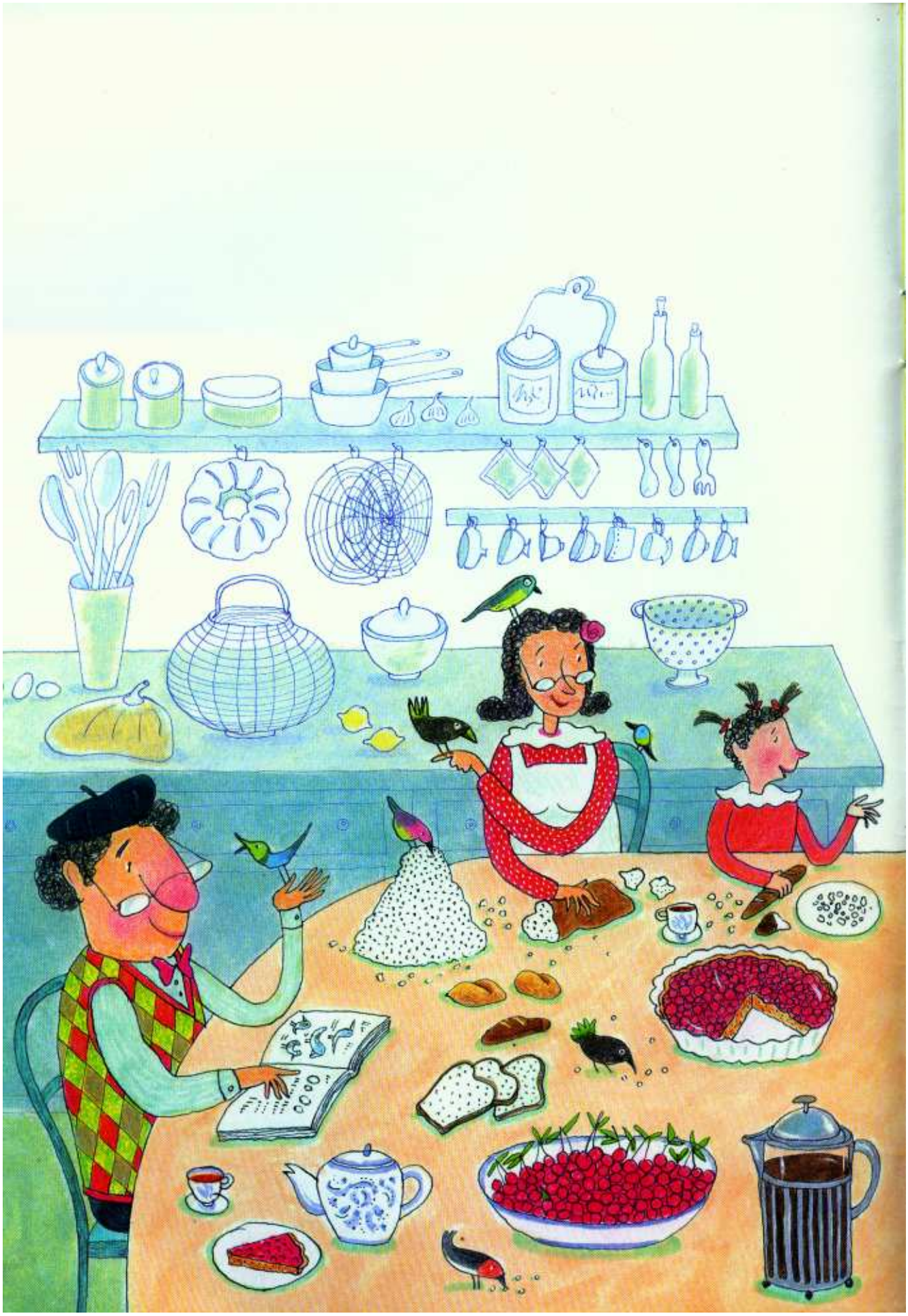

फिर वे खाने की मेज पर बैठे, ब्रेड के टुकड़े-टुकड़े करते थे।
कभी उनके पड़ोसी भी ब्रेड लेकर पहुँच जाते थे।

बुलबुल को दादा-दादी के साथ वक्त बिताना अच्छा लगता था। दादा उसे पंछियों के बारे में तरह-तरह की बातें बताते थे और बोलियों से उन्हें पहचानना सिखाते थे।

दादी उसे पंछियों की बोली सिखातीं। बुलबुल को सबसे ज्यादा मजा सबके साथ पंछियों को दाना खिलाने में आता।

महीने बीत गए और सर्दियाँ आ गईं। दादी की तबीयत ठीक नहीं थी।

उन्हें ठंड लगती।

वे बात नहीं करतीं।

सीटी भी नहीं बजातीं।

आराम-कुर्सी तक नहीं आ पातीं।

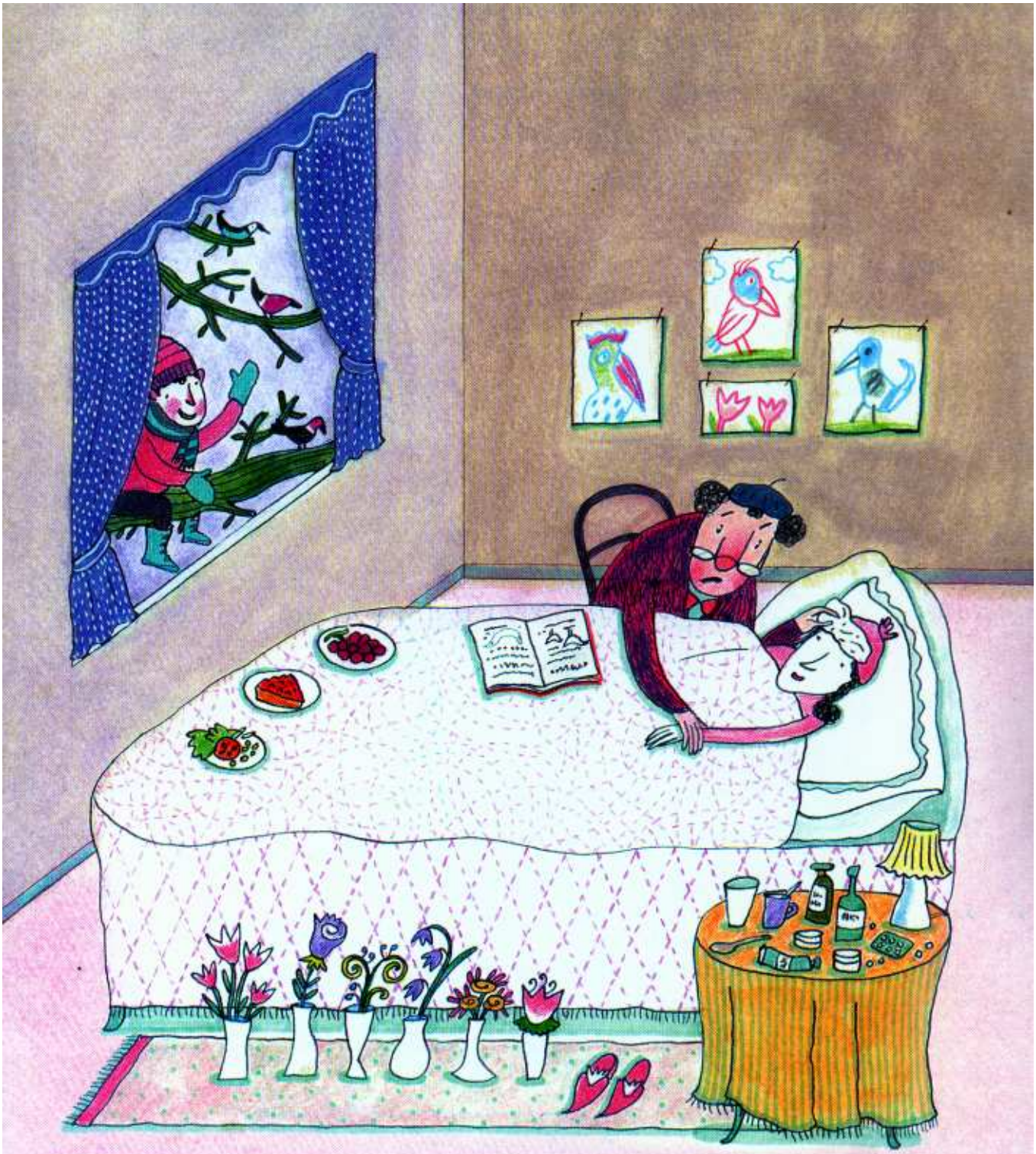

बिस्तर ही उनका घर बन गया था। दादा उन्हें किताबों से पढ़कर सुनाते, उनकी पसंद का खाना बनाते। पर दादी को भूख ही न लगती। वे खुद ही किसी भूले-भटके पंछी-सी लगने लगी थीं।

'दुखी न हो,' दादी ने दादा से हल्के से कहा था। 'जब इन पंछियों को देखोगे तो मुझे वहीं कहीं पाओगे।'

दादी हमेशा के लिए सो गईं, चेहरे पर मुस्कान लिए।
बाहर पंछी शोरगुल कर रहे थे।

दादा दुख से चूर हो गए। सारा दिन वे दादी की कुर्सी पर बैठे रहते। बुलबुल उनकी पसंद की चीजें बनाती।

पर उनका खाने का मन ही न करता।

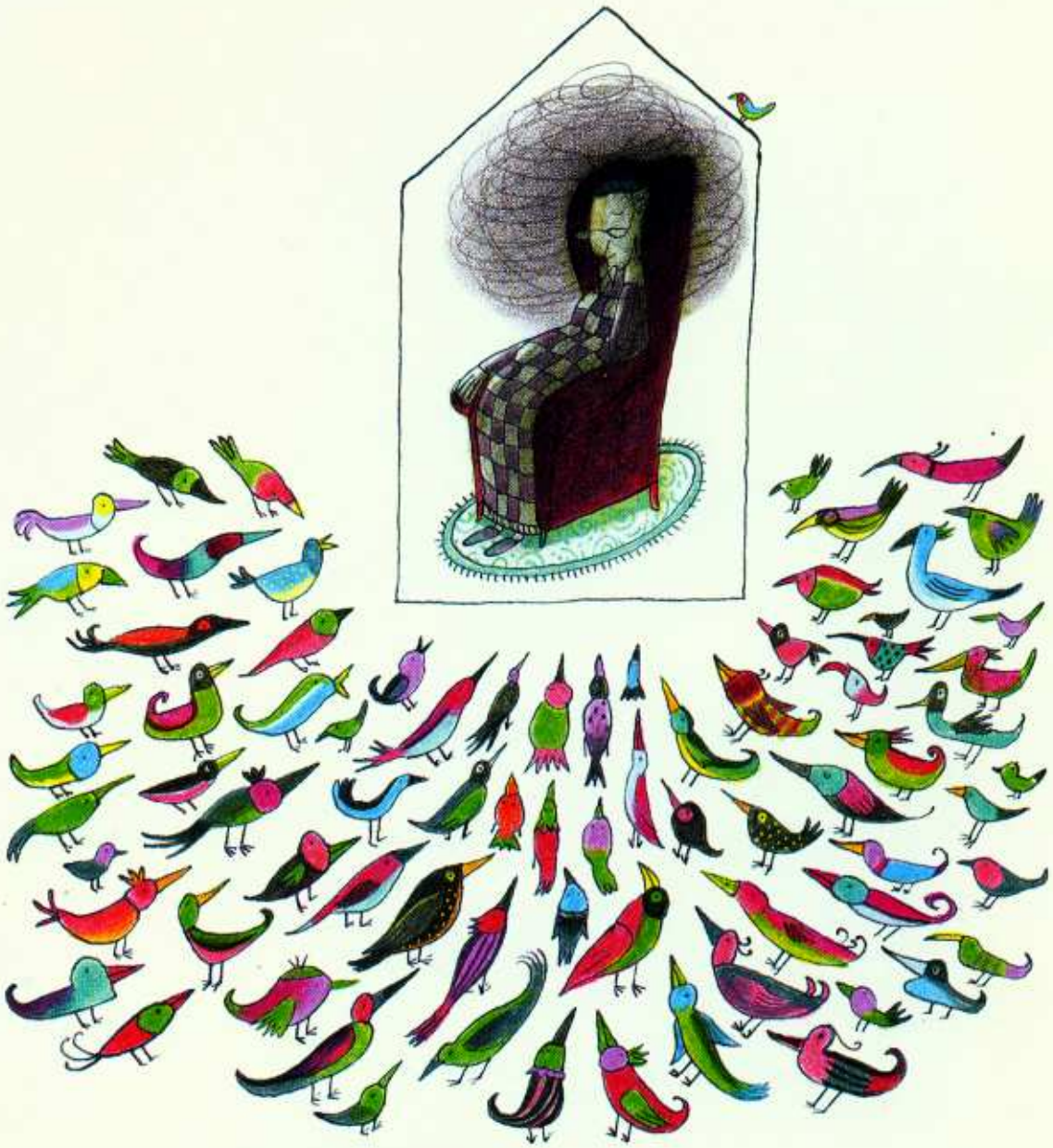

हर शुक्रवार, पंछी वहाँ इकट्ठे होते। पर दादा जैसे उन्हें
न देखते, न सुनते।

और फिर एक दिन, एक छोटा-सा प्यारा पंछी आकर उनकी खिड़की में बैठ गया, सुंदर आँखों वाला। अचानक उन्हें दादी की बात याद आई। लगता है, 'पंछी प्यारा लौट आया है!'

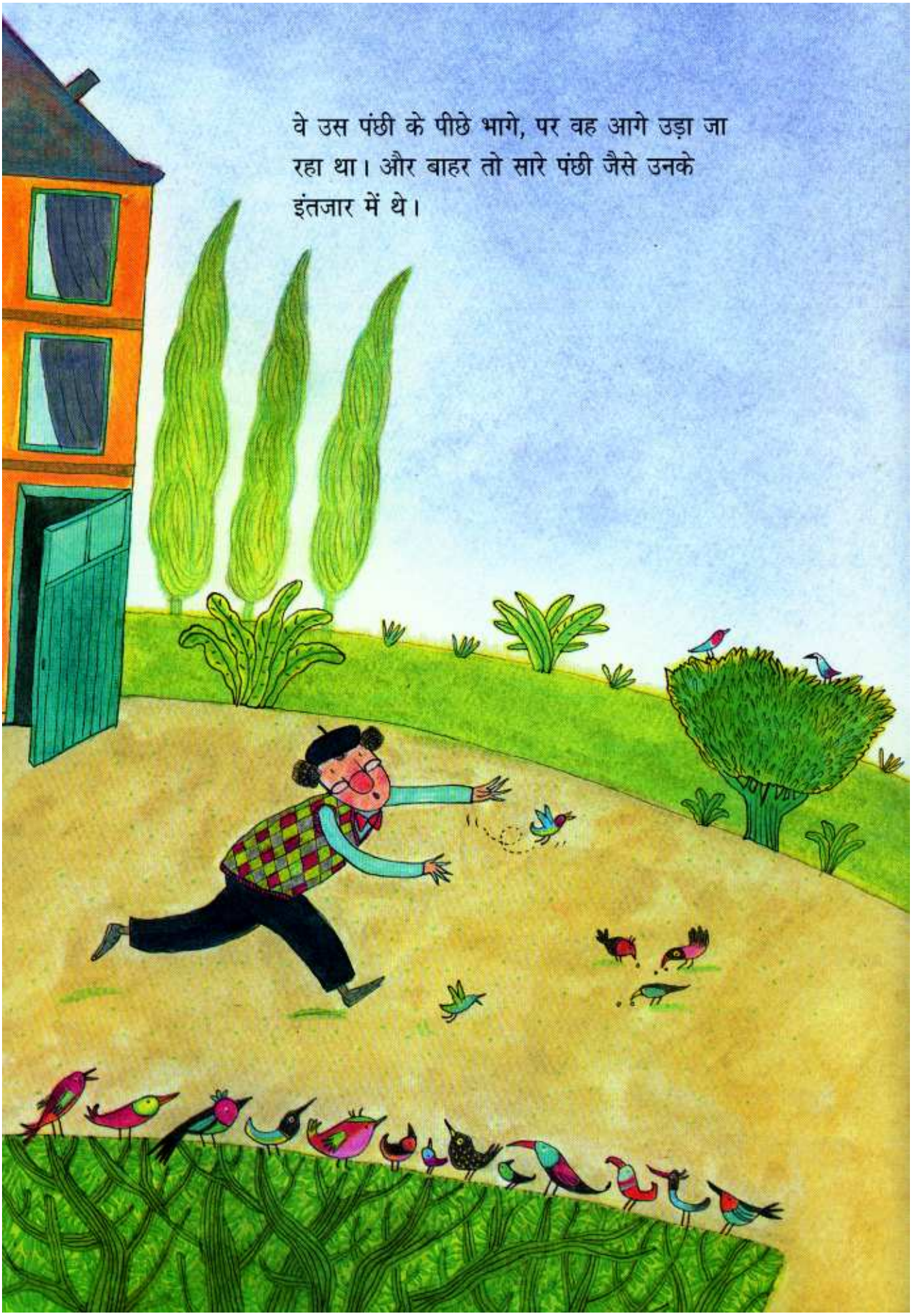

वे उस पंछी के पीछे भागे, पर वह आगे उड़ा जा रहा था। और बाहर तो सारे पंछी जैसे उनके इंतजार में थे।

दादा उन्हें बारी-बारी गौर से देखते रहे। वे सब उन्हें दादी की याद दिला रहे थे। इनमें से कौन-सी हैं दादी? वह सुंदर चोंच वाली? या मीठी बोली वाली या यह सुंदर परों वाली। इन सब को उन्होंने भुला कैसे दिया था!

'उनके बीच जा बैठता हूँ,' कहते वे चेरी के पेड़ पर चढ़ गए।
डालियाँ फूलों से भरी पड़ी थीं। पेड़ पर कई सारे पंछी भी थे।
'तुम बिल्कुल उसकी तरह लगते हो,' दादा ने कहा।

'तुम भी, और तुम और तुम भी...'

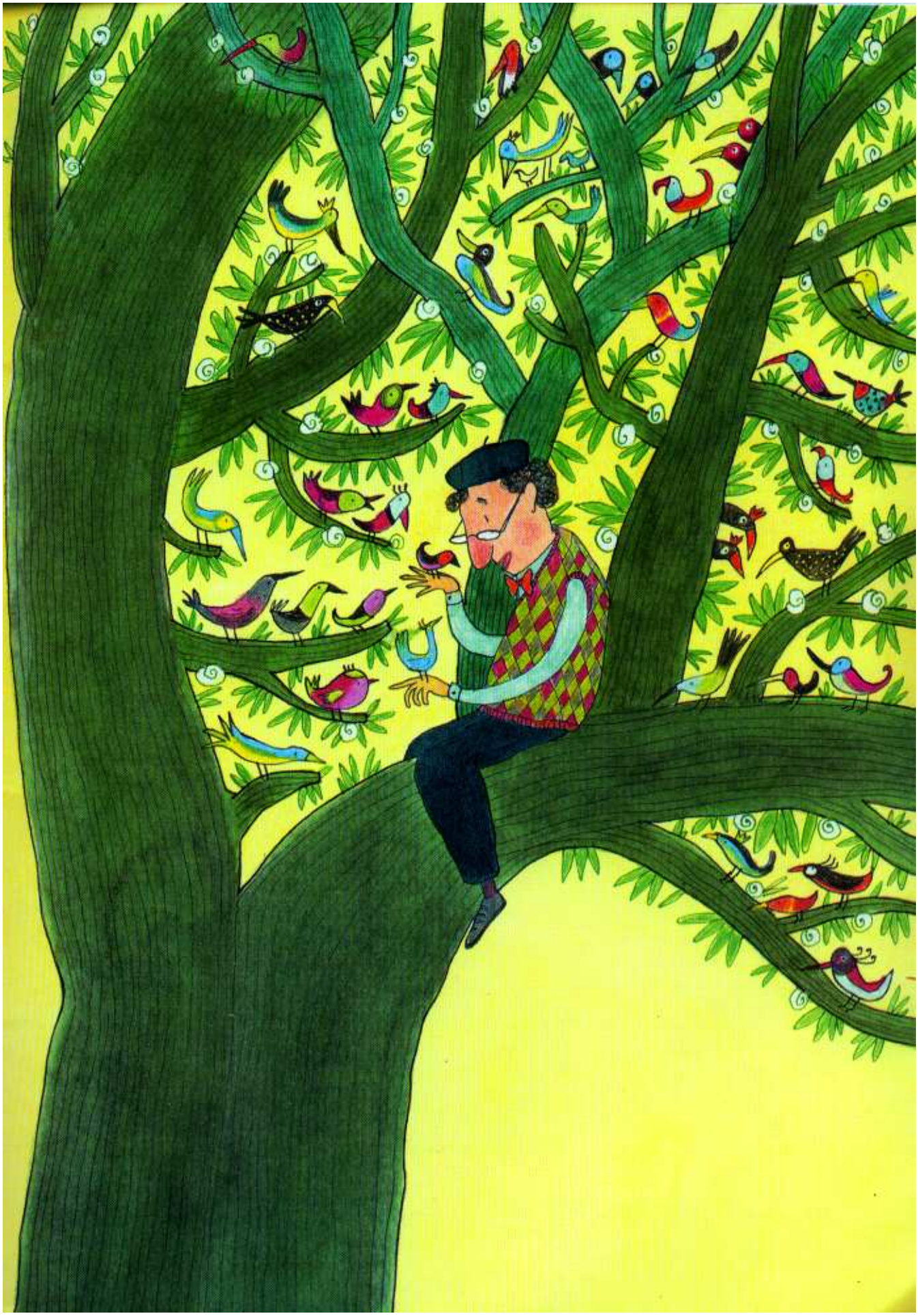

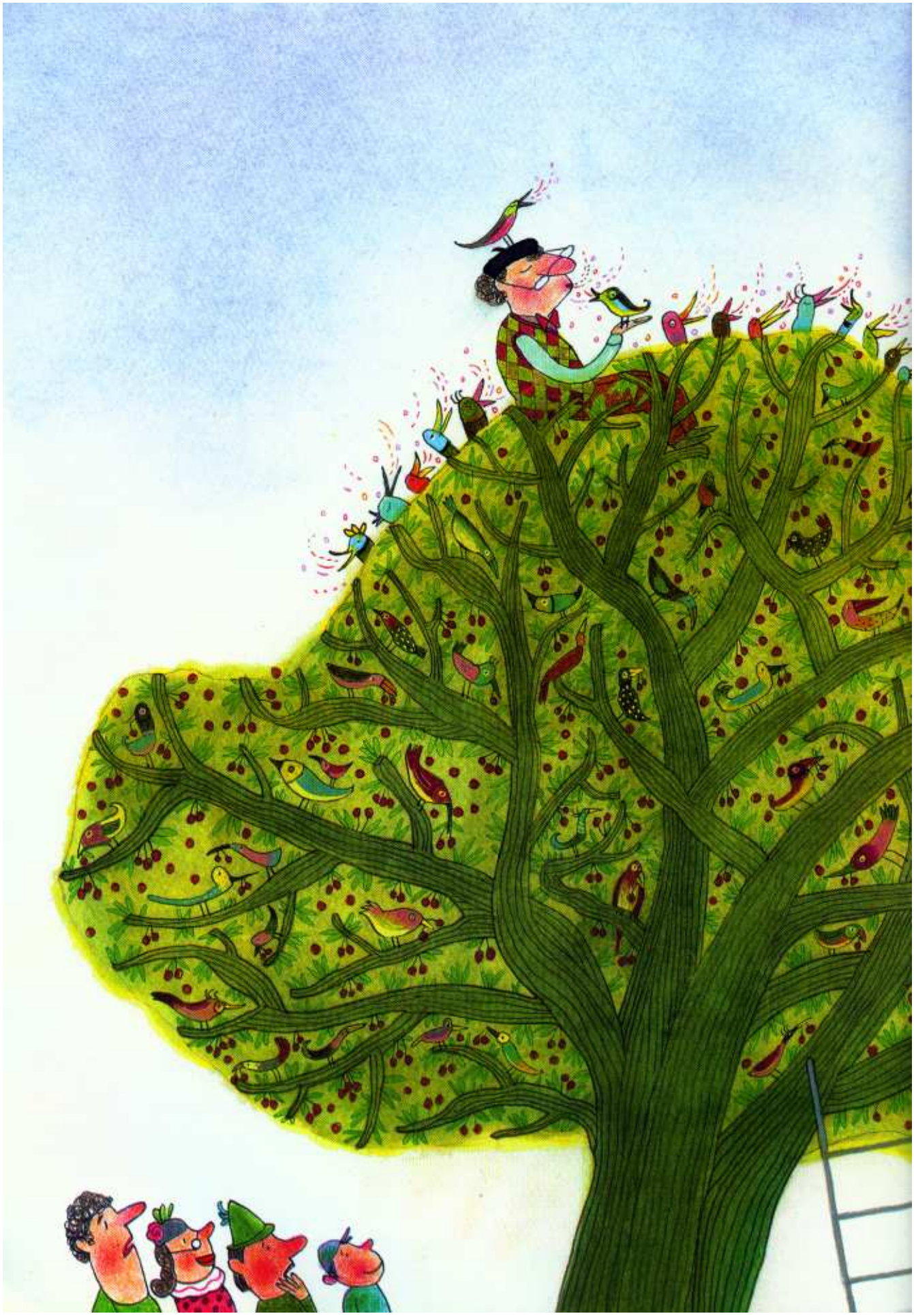

पेड़ से उतरने का दादा का मन ही नहीं था। उन्हें बहुत अच्छा लगने लगा था। ताजा हवा के झोंको ने उनकी उदासी को दूर भगा दिया था। जब वे पंछियों के साथ गाने लगे तो लगा कि साथ दादी भी गा रही हैं। चेरी के पेड़ पर सफेद फूलों की बौर आ गई थी। कुछ हफ्तों बाद, उसमें फल आ गए। अपने जन्मदिन पर बुलबुल एक टोकरी लेकर आई।
उसने पूछा, 'दादा, क्या फल पक गए हैं?'

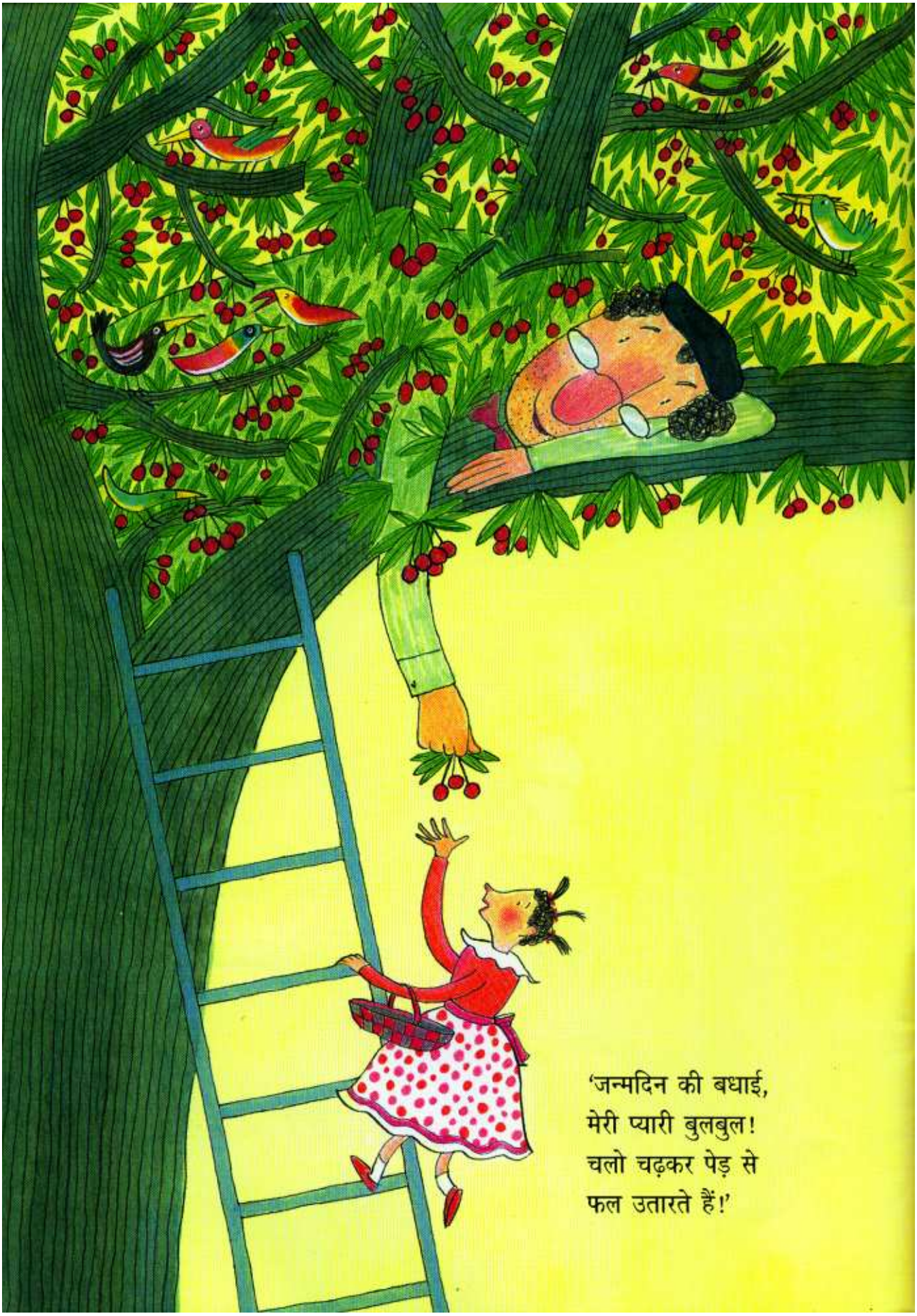

'जन्मदिन की बधाई,
मेरी प्यारी बुलबुल!
चलो चढ़कर पेड़ से
फल उतारते हैं!'

थोड़ी देर बाद वे दोनों पेड़
से उतरे। 'दादा, आप को
यह सब फिर करते देख,
बड़ा अच्छा लग रहा है!'
बुलबुल चहकी।

उस रोज के बाद, हर शुक्रवार, दादा और बुलबुल खाने की बड़ी मेज पर बैठने लगे, ब्रेड के टुकड़े करते हुए।

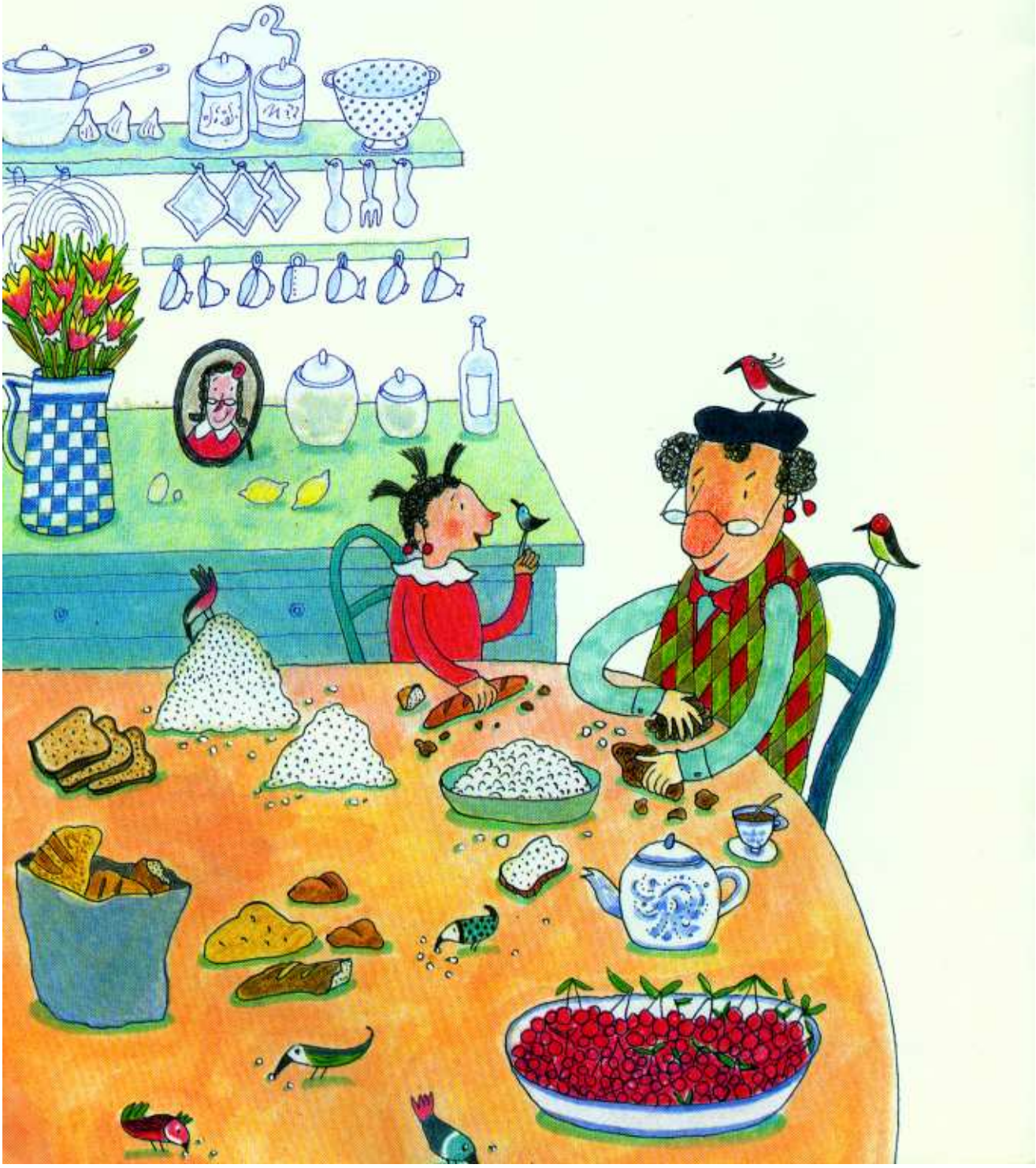

उसके बाद, वे बाहर जाकर पंछियों को खाना खिलाते और बुलबुल उनकी बोली सुनकर वैसी ही सीटी बजाती। 'बिल्कुल दादी की तरह,' दादा कहते। और फिर, मुस्करा देते।

दादी, दादा और बुलबुल सभी पक्षियों से
बहुत प्यार करते हैं।
दादी के गुजर जाने के बाद पक्षी ही तो
परिवार को एक साथ रहना सिखाते हैं...

60 रुपये
ISBN 978-93-80141-07-7
9 789380 141077